भारत में बुजुर्गों में टीबी

प्रमुख पहलू

परिचय

क्षय रोग (टीबी) भारत की सबसे बड़ी स्वास्थ्य चुनौतियों में से एक है। इससे बुजुर्ग जनसंख्या को अत्यधिक खतरा है, क्योंकि इससे साथ में होने वाली कई बीमारियां, जैसे उच्च मृत्यु दर, टीबी की पहचान न हो पाना और अधिक हानिकारक उपचार परिणामों के कारण जोखिम बढ़ जाता है। बुजुर्ग लोग गैर–संचारी रोगों के प्रति भी अधिक संवेदनशील होते हैं।

यू.एस.ए.आई.डी. के सहयोग से रीच ने 2022–23 में बुजुर्गों में टीबी पर पहला राष्ट्रीय स्तर का त्वरित मूल्यांकन (रैपिड असेसमेंट) किया। मूल्यांकन का उद्देश्य बुजुर्गों में टीबी के बारे में समझ को मजबूत करने के लिए साक्ष्य आधार तैयार करना था ताकि उनकी शारीरिक, सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने के लिए स्पष्ट रणनीति बनाई जा सके। इस मूल्यांकन ने ज्ञान और देखभाल वितरण प्रणालियों में अंतर को दूर करने के लिए प्रमुख अनुशंषाएं भी प्रस्तुत की थीं।

यह संक्षिप्त विवरण पाठकों को भारत में बुजुर्गों पर टीबी के व्यापक प्रभाव को समझने में सहायता करने के लिए तैयार किया गया है। साथ ही इसमें बुजुर्गों में टीबी पर मूल्यांकन में प्रस्तुत प्रमुख निष्कर्षों को भी शामिल किया गया है।

बुजुर्ग कौन हैं?

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यू.एच.ओ.) 65 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों को बुजुर्ग मानता है, जबकि भारत सरकार के नीतिगत दस्तावेज़ों में 60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों को बुजुर्ग माना गया है।

भारतीय बुजुर्गों में टीबी

भारत में 60 वर्ष से अधिक आयु के 104 मिलियन लोग यानि कुल जनसंख्या के 8.6 प्रतिशत (जनगणना 2011) हैं। अनुमान है कि 2026 तक यह कुल जनसंख्या का 12.6 प्रतिशत हो जाएंगे।[1] राष्ट्रीय टीबी प्रसार सर्वेक्षण, 2019–21 के अनुसार 55+ आयु वर्ग के लोगों में टीबी का भार 588/लाख है, जो कि समग्र राष्ट्रीय भार 316/लाख से काफ़ी ज्यादा है।[2] भारत टीबी रिपोर्ट 2023 से पता चलता है कि 2022 में टीबी से ग्रसित लोगों में से 23.6 प्रतिशत 55 वर्ष से अधिक आयु के थे।[3]

60 वर्ष से अधिक आयु के लोग

स्रोतः जनगणना 2011

*2026 के लिए अनुमान

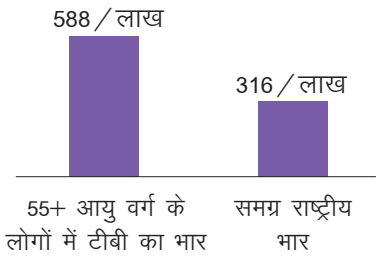

स्रोतः राष्ट्रीय टीबी प्रसार सर्वेक्षण, 2019–21

स्रोतः इंडिया टीबी रिपोर्ट 2023

[1] भारत सरकार। 2016. भारत में बुजुर्ग। नई दिल्लीः केंद्रीय सांख्यिकी कार्यालय, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार।

[2] भारत में राष्ट्रीय टीबी प्रसार सर्वेक्षण (2019–2021)। ऑनलाइन उपलब्ध हैः *https://tbcindia.gov.in/showfile.php?lid=3659* (24 अगस्त 2022 को एक्सेस किया गया)

[3] भारत टीबी रिपोर्ट 2023। यहां उपलब्ध हैः *https://tbcindia.gov.in/showfile.php?lid=3680* (31 मार्च 2023 को एक्सेस किया गया)

बुजुर्ग लोग टीबी के प्रति अधिक संवेदनशील क्यों होते हैं?

जोखिम कारक

बुजुर्ग लोग संक्रमण के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और युवा जनसंख्या की तुलना में टीबी उपचार का असर उन पर कम होता है।

रोग का पता लगने और उपचार शुरू करने में देरी

टीबी के लक्षण जैसे वज़न कम होना, लगातार खांसी, थकान और भूख न लगना या तो अन्य बीमारियों के लक्षण समझे जाते हैं या ''बुढ़ापे के लक्षण'' समझकर अनदेखे कर दिए जाते हैं।

उपचार पूरा होना और परिणाम

टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों में प्रतिकूल दवा प्रतिक्रियाएं (ए.डी.आर.) सामान्य से अधिक और गंभीर होती हैं। साथ ही अन्य बीमारियों के चलते उन्हें अधिक गोलियां खानी पड़ती है। इसका मतलब है कि उनमें टीबी उपचार को पूरा करने की संभावना कम होती है।

बुजुर्गों में लिंग और टीबी

वर्तमान आंकड़ों के आधार पर, टीबी का प्रभाव बुजुर्ग महिलाओं की तुलना में बुजुर्ग पुरुषों में अधिक है। हालांकि, लिंग आधारित मानदंड और भेदभाव बुजुर्ग महिलाओं पर अधिक प्रतिकूल प्रभाव डाल सकते हैं।

टीबी से ग्रसित बुजुर्गों के लिए चुनौतियां

शारीरिक कमज़ोरियां

सेम्पल कलेक्शन के लिए कई सुविधा केन्द्रों का दौराः टीबी के लक्षण वाले बुजुर्गों के लिए जाँच केन्द्रों तक पहुँचना चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उन्हें सेम्पल कलेक्शन के लिए कई जाँच केन्द्रों का दौरा करना पड़ता है।

साथी और परिवहन के विशेष साधनों की आवश्यकताः कई बुजुर्ग लोग गिरने के डर या सामान्य शारीरिक कमज़ोरी के कारण बिना किसी सहायक के स्वास्थ्य सुविधा केन्द्रों तक पहुँचने में असमर्थ होते हैं, जिससे उपचार में देरी होती है।

स्वास्थ्य सुविधाओं में पहुँच संबंधी समस्याएंः कई स्वास्थ्य सुविधाओं में पहुँच संबंधी समस्याएं (कई सीढ़ियां, बैठने की सीमित जगह वाले छोटे प्रतीक्षा कक्ष और अस्पष्ट साइनबोर्ड) टीबी से ग्रसित बुजुर्गों के लिए उन्हें चुनौतीपूर्ण बना देती हैं।

काम और वेतन का नुकसानः शारीरिक कमजोरी के कारण काम करने में असमर्थता हो सकती है, जिसके कारण आर्थिक या मानसिक स्वास्थ्य संबंधी दुष्परिणाम हो सकते हैं, जैसे आय के स्रोत और सामाजिक संबंधों में कमी, जीने की चाह और स्वयं की देखभाल के लिए प्रेरणा का अभाव।

सामाजिक–आर्थिक कमज़ोरियां

आर्थिक स्वतंत्रता की हानि: बुजुर्गों की परिवार के सदस्यों पर आर्थिक रूप से निर्भर होने की संभावना बहुत ज्यादा होती है, जो उनके स्वास्थ्य सेवा व्यवहार को काफ़ी हद तक प्रभावित करता है।

पोषण संबंधी चुनौतियां: टीबी से ग्रसित लोगों को पोषण संबंधी सहायता की ज़रूरत होती है, अन्यथा यह खराब उपचार और परिणामों का प्रमुख कारण बन जाता है। बुजुर्गों को पोषण संबंधी चुनौतियों का सामना करने की भी अधिक संभावना होती है। टीबी से ग्रसित बुजुर्ग महिलाओं की स्थिति बुजुर्ग पुरुषों की तुलना में अधिक खराब होती है।

वित्तीय सहायता योजनाओं से कम जुड़ाव: टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों को उन योजनाओं तक पहुँचने में मुश्किल होती है जो उन्हें लाभ पहुँचा सकती हैं। केन्द्र सरकार द्वारा बुजुर्ग पेंशन योजना के अलावा, राज्यों द्वारा भी पेंशन योजनाओं के लिए प्रावधान हैं।

मनोवैज्ञानिक और सामाजिक कारक

आर्थिक निर्भरता: आर्थिक निर्भरता के कारण बुजुर्गों को परिवार के लोगों द्वारा बहुधा अनादर और अकेलेपन का अनुभव कराया जाता है, जिसके कारण उन्हें सही देखभाल नहीं मिल पाती।

टीबी के बारे में कम जानकारी: बुजुर्ग व्यक्तियों के पास सामाजिक नेटवर्क, इंटरनेट तक पहुँच या स्वास्थ्य संबंधी जानकारी ऑनलाइन खोजने के लिए तकनीक का उपयोग करने की कम सहजता होती है।

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं: परिवार या समुदाय में उपयोगी या प्रासंगिक न होने की चिंता; जीवन उद्देश्य और काम का नुकसान; अकेलापन; निर्भरता; भावनाओं की कमी; टीबी का डर और ''आत्म–कलंक'' की भावना; तंबाकू, शराब और अन्य पदार्थों (मुख्य रूप से पुरुषों के लिए प्रासंगिक) के उपयोग में वृद्धि बुजुर्गों के द्वारा सामना की जाने वाली कुछ मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं हैं।

लक्षणों पर विचार

बुजुर्ग व्यक्ति में टीबी के लक्षणों को नज़रअंदाज़ किए जाने की संभावना अधिक होती है।

ज्ञानवर्धन एवं बेहतर देखभाल वितरण के लिए प्रमुख अनुशंसाएं

60 वर्ष से अधिक आयु के लोगों के बीच व्यवस्थित लक्षित स्क्रीनिंग और एक्टिव केस फाईडिंग के लिए

- स्वास्थ्य केन्द्रों और समुदाय–आधारित स्क्रीनिंग के लिए मानक संचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) विकसित करना
- समुदाय–आधारित सेटिंग्स में बुजुर्ग लोगों की स्क्रीनिंग और निगरानी को बढ़ावा देना
- लक्षित स्क्रीनिंग के परिणामों को एकत्रित करने और तुलना करने के लिए डैशबोर्ड विकसित करना

बुजुर्गों के निदान और उपचार के लिए दिशा–निर्देशों में संभावित संशोधन के लिए

- असामान्य संकेतों और लक्षणों के लिए नैदानिक प्रोटोकॉल (जैसे सेम्पल प्रोटोकॉल)
- अन्य बीमारियों की व्यापक जाँच एवं दवा की खुराक के समायोजन के लिए दिशानिर्देश
- बीमारी और प्रतिकूल परिणामों के जोखिम का अनुमान लगाने के लिए जोखिम मूल्यांकन–आधारित स्कोरिंग प्रणाली

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एन.एच.एम.) और राष्ट्रीय एन.सी.डी. कार्यक्रम के बीच समन्वय के लिए

- मधुमेह के साथ–साथ टीबी की स्क्रीनिंग प्रोटोकॉल का पालन करना
- बुजुर्ग जनसंख्या के बीच बड़े पैमाने पर टीबी और हृदय स्वास्थ्य जांच के लिए प्रोटोकॉल विकसित करना और लागू करना
- 60 वर्ष से अधिक आयु के रोगियों की संख्या को रिकॉर्ड करने और रिपोर्ट करने के लिए निक्षय का उपयोग करना
- स्वास्थ्य और कल्याण केन्द्रों (एच.डब्ल्यू.सी.) में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों (सी.एच.ओ.) को प्रशिक्षित करना ताकि एच.डब्ल्यू.सी. में आने वाले 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों की टीबी स्क्रीनिंग की जा सके

प्रमुख अनुशंषाएं

बुजुर्गों की स्वास्थ्य देखभाल के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम (एन.पी.एच.सी.ई.) के साथ समन्वय के लिए

- एच.डब्ल्यू.सी., प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों (पी.एच.सी.) और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों (सी.एच.सी.) में एन.पी.एच.सी.ई. नीति का कार्यान्वयन
- बुजुर्गों के लिए समग्र देखभाल मॉडल पर सामूहिक रूप से प्रोटोकॉल का निर्माण करना

सामाजिक समर्थन बढ़ाने के लिए

- पेंशन योजनाओं, परिवहन भत्ते (या मुफ्त परिवहन पास), पूरक पोषण सहायता, निक्षय मित्रों के लिए बुजुर्गों को प्राथमिकता देने आदि के लिए नामांकन के साथ टीबी से ग्रसित बुजुर्गों का समर्थन करना
- लक्षित कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन के लिए प्रोटोकॉल विकसित करना
- व्यावसायिक प्रशिक्षण और/या घर–आधारित स्थानीय उद्योगों के साथ जोड़ना

बुजुर्गों में टीबी पर शोध के लिए

- बुजुर्गों की अधिक संख्या वाले क्षेत्रों को चिन्हित करना
- राज्य स्तर पर बीमारी के भार पर स्पष्टता
- बुजुर्ग टीबी समूह के बीच प्रतिकूल परिणामों के लिए पूर्वानुमान, जिसमें मादक द्रव्यों के उपयोग की व्यापकता, उपचार पर लिंग का प्रभाव और टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों के बीच उपचार पूरा होने की दरों पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा

टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों को किस प्रकार सहायता दी जा सकती है?

सामुदायिक और संस्था आधारित सेटिंग्स जैसे कि एच.डब्ल्यू.सी., वृद्धाश्रम आदि में एक मजबूत निगरानी तंत्र के साथ, बुजुर्गों पर केंद्रित स्क्रीनिंग सुनिश्चित करके

दवाओं की होम डिलीवरी के माध्यम से दवा तक पहुँच को आसान बनाकर

नियमित रूप से घर पर जाकर टीबी से ग्रसित बुजुर्गों को मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक सहायता प्रदान करके

स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में आने वाले 60 वर्ष से अधिक आयु के सभी लोगों के लिए टीबी की जाँच और सेम्पल कलेक्शन करने के लिए स्वास्थ्य एवं कल्याण केन्द्रों में सी.एच.ओ. का प्रशिक्षण सुनिश्चित करके

निक्षय प्लेटफॉर्म पर बुजुर्ग रोगियों की संख्या को व्यवस्थित रूप से रिकॉर्ड और रिपोर्ट करके

टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों को पेंशन योजनाओं में नामांकन कराने, परिवहन भत्ते (या मुफ्त परिवहन पास) और अतिरिक्त पोषण सहायता प्राप्त करने में सहायता प्रदान करके, तथा अन्य योजनाओं के अलावा नि–क्षय मित्रों में बुजुर्गों को प्राथमिकता देकर

टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर और/अथवा घरेलू स्थानीय उद्योग स्थापित करके

स्वास्थ्य सुविधा और समुदाय स्तर पर ये सहायक कार्य, काफी हद तक, टीबी से ग्रसित बुजुर्ग लोगों के सामने आने वाली चुनौतियों को कम करने में मदद करेंगे। अंततः वे एक ऐसा माहौल और टीबी कार्यक्रम एवं स्वास्थ्य प्रणाली तैयार करेंगे जो उम्र के हिसाब से संवेदनशील हो और बुजुर्गों की आवश्यकताओं को प्राथमिकता दे।

25 REACH Equitable Health for All

Resource Group for Education and Advocacy for Community Health (REACH)
No. 194, 1st Floor, Avvai Shanmugam Salai Lane,
Lloyds Road, Royapettah, Chennai – 600014
Phone: 044-45565445 / 28132099

Email: support@reachindia.org.in
Media Related Queries: media@reachindia.org.in

www.reachindia.org.in @Speaktb @SPEAKTB @REACHSpeakTB

All photographs in this report that feature TB Champions and/or people with TB are used with full, informed consent.

This document is made possible by the generous support of the American People through the United States Agency for International Development (USAID). The contents are the sole responsibility of REACH and do not necessarily reflect the views of USAID or the United States Government.